Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

नागार्जुन को काव्य मे संवेदना के रूप

Manju*

MA in Hindi (UGC NET)

सारः- नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार कवि माना जाता है। नागार्जुन ने जीवन को उसके विविध रुपो मे, जटिल संघर्शो को, राजनीतिक विकृतियों को, मजदूर आन्दोलनों को, किसान जीवन के सामान्य दुःख सुख को पहचानने और अभिव्यक्त करने का वृहतर सर्जनात्मक उत्तरदायित्व अपने कधों पर उठाया है। जिस प्रकार उनकी काव्य संरचना और कथ्य के स्तर पर वैविध्य है वैसा ही वैविध्यमय उनका जीवन भी रहा है। नागार्जुन की बात करते ही उनकी कविताएं "अकाल और उसके बाद" बादल को घिरते देखा तथा "कालिदास सच-सच बतलाना" हठात ध्यान मे आ जाती है लेकिन इन तीनो कविताओं की विशयवस्तु अलग-अलग है, इनका षिल्प भी एक दूसरे से भिन्न है और तीनों की संवेदना के भी अलग-अलग रंग है। नागार्जुन के काव्य में संवेदना के इन्ही भिन्न-भिन्न रुपों के माध्यम से हम उनके काव्य का अध्ययन इस इकाई मे करेंगे। किसी भी वस्तु, भाव और स्थिति के हनदय पर पड़े प्रभाव की प्रतिक्रिया ही संवेदना कहलाती है नागार्जुन का काव्य संसार वैविध्यमय होने के साथ-साथ बहुत व्यापक एवं विराट है इसमें प्रकृति, मनुष्य, पशु, राजनीतिक सामाजिक जीवन, जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष व्यगंय की तीखी धार दैनन्दिन जीवन की गतिविधियाँ सब शामिल है।

----------X----------

किसी भी वस्तु भाव या स्थिति का हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रतिक्रिया होती है उसे ही संवेदना कहते है। इस बात को दूसरे ढ़ग से भी समझा जा सकता है यह दुनिया कितनी बड़ी है और कितनी भरी-पूरी है इसके इतने सारे रंग और रूप है। इतने सारे पदार्थ है इतनी वस्तुएं है प्रत्येक वस्तु प्रत्येक घटना हम पर किसी न किसी रूप में असर डालती है जैसे पानी मे ककड़ फेकने पर तरंग उठती है वैसे ही हम जब कुछ देखते सुनते हैं या जब हमें कुछ होता है तो हम भी प्रतिक्रिया करते है। हमारा हृदय प्रभावित होता है और तब उसी प्रभाव के अनुरूप भाव उत्पन्न होता है वस्तुओं का हृदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रतिक्रिया ही संवेदना कहलाती है आदिकवि वाल्मिीकि का वह प्रसिद्ध प्रसंग तो आप जानते ही है जब एक क्रौच पक्षी की हत्या से आहत कवि के मुंह से अनायास छांद फूट पड़ता है यही संवेदना है अंग्रेजी भाशा के कवि शेक्सपीयर की प्रसिद्ध उक्ति है-

O i have suffrred with those whom i saw saffer ; मै उनके दुख से दुखी हुआ जिन्हें मैने दुख भोगते देखा। एक कवि अत्यन्त संवेदनशील होता है अर्थात् अधिक से अधिक वस्तुओं स्थितियों, प्रसंगो का उस पर प्रभाव पड़ता है और वह उन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है जो कवि जितना बड़ा होगा वह उतना ही अधिक संवेदनशील होगा यानि उसकी दुनिया भी बहुत बड़ी होगी और इसलिए उसके संवेदना के रूप भी बहुत होगें एक बड़ा कवि प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक जीव से तादात्मय अनुभव करता है।

नागार्जुन ने अपनी एक कविता "प्रतिबद्ध हूँ" मे इसे बहुत बढ़िया ढ़ग से व्यक्त किया है।

सबंद्ध हूँ जी हाँ सबद्ध हूँ

सचर अचर सृश्टि से

शीत से, ताप से, धूप से, हिमपात से

भूमिकाः-

नागार्जुन का जन्म 30 जून 1911 को हुआ ये प्रगतिवादी विचारधारा के लेखक और कवि है। नागार्जुन ने 1943 ई. के आसपास साहित्य सेवा के क्षेत्र मे कदम रखा षून्यवाद के रूप मे नागार्जुन को नाम विशेष उल्लेखनीय है। नागार्जुन को असली नाम "वैधनाथ मिश्र" था हिन्दी साहित्य मे उन्होने नागार्जुन तथा मैथिली मे यात्री उपनाम से रचनाओं का सृजन किया।

30 जून 1911 के दिन ज्येश्ठ मास की पूर्णिमा का चन्द्रमा हिन्दी काव्य जगत के उस दिवावर के उदय का साक्षी था जिसने अपनी फकीरी और बेबाकी से अपनी अनोखी पहचान

www.ignited.in

बनाई कबीर की पीढ़ी का यह महान कवि नागार्जुन के नाम से जाना गया। मधुबनी जिले के सतंलखा गाँव की धरती बाबा नागार्जुन की जन्मभूमि बन कर धन्य हो गई। "यात्री" आपका उपनाम था और यही आपकी प्रवृत्ति की संज्ञा भी थी। परपरांगत प्राचीन प्रद्वति से संस्कृत की षिक्षा प्राप्त करने वाले बाबा नागार्जुन हिन्दी, मैथिली, संस्कृत तथा बाग्ंला मे कविताएं लिखते थे। मैथिली भाशा मे लिखे गए आपके काव्य संग्रह 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए आपको साहित्य आकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया हिन्दी काव्य मंच पर अपनी सत्यवादिता और लाग-लपेट से रहित कविताएं लम्बे युग तक गाने के बाद 5 नवम्बर सन् 1998 को रचनाकार हमो बीच से विदा हो गये। उनके स्वंय कहे अनुसार उनकी 40 राजनीतिक कविताओं का चिरप्रतीक्षित संग्रह विशाख आज भी उपलब्ध नही है संभावना भर की जा सकती है कि कभी छुटपुट रूप मे प्रकाषित हो गयी हो किंतु वह इस रूप मे चिन्हित नही है। सो कुल मिलाकर तीसरा सग्रंह अब भी प्रतीक्षित ही मानना चाहिए हिन्दी मे उनकी बहुत सी काव्य पुस्तके है यह सर्वविदित है।

कृतियाँ- युगधारा, खिचड़ी विप्लव देखा हमने 'पत्रहीन नग्न गाछ' मै मिलट्री का बूढ़ा घोड़ा' जैसी रचनाओं से आम जनता मे चेतना फैलाने वाले नागार्जुन के साहित्य पर विमर्ष का सारांश था कि बाबा नागार्जुन जनकवि थे और वे अपनी कविताओ मे आम लोगो के दर्द को बयां करते थे विचारक हॉव्सबाम ने इस सदी को अतिवादों की सदी कहा है। लोकभाशा के संपर्क मे रहने के कारण इनकी कविताएं औरो से अलग है। इन्होंने गरीबों के बारे मे जन्म देने वाली माँ के बारे में, मजदूरो के बारे मे लिखा है-

सप्रसिद्ध कवि आलोक धन्वा ने नागार्जुन की रचनाओं को सदर्भित करते हुए कहा कि उनकी कविताओं मे आजादी की लड़ाई की अतर्वस्तु शामिल है नागार्जुन के गीतो मे काव्य की पीड़ा जिस लयात्मकता के साथ व्यक्त हुई है। वह अन्यत्र कही नही दिखाई देती

नागार्जुन के काव्य मे संवेदना के विविध रूपः-

संवेदना के भिन्न-भिन्न रूपों पर बात करने से पहले सबसे पहली बात जो हम ध्याम मे रखेंगे वह यह कि कोई भी बात हवा मे नही हो सकती कहने का मतलब यह है कि जब हम किसी कवि के बारे मे बात कर रहे है तो उसकी कविता को सामने रखना पड़ेगा लेकिन यहां कुछ और बाते भी ध्यान मे रखना जरूरी है हम जानते है कि नागार्जुन बिहार प्रांत के मिथिला क्षेत्र के रहने वाले है उनकी मातृभाशा मैथिली है। उन्होंने मैथिली मे भी अनेक कविताएं लिखी है और युगधारा की भूमिका के अनुसार 'कवित्व का आरंभिक उन्मेश संस्कृत के माध्यम से हुआ नागार्जुन को मिथिला के ग्राम-जीवन का गहरा आत्मीय अनुभव तो है ही सम्पूर्ण भारतीय अपमहाद्वीप के जीवन का भी विस्तृत अनुभव है। उनका मैथिली उपनाम 'यात्री' है जो अकारण नही है। नागार्जुन लगातार यात्रा करते रहे है सुदूर श्रीलंका से लेकर तिब्बत तक, कष्मीर से कठियावाड़ तक इस प्रकार यह सम्पूर्ण भारतीय भू भाग उनकी कविता मे है मिथिला के 'रूचिर भू-भाग से लेकर मुलुंड और वितस्ता' अमल धवल गिरि के षिखरो से लेकर मानसरोवर के स्वर्णिम कमलो तक एक बात और नागार्जुन तो प्रगतिवादी है। माक्र्सवादी किसान-सभा के आंदोलनो से लेकर सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन और अनेक अन्य आंदोलनो में उन्होंने भाग लिया है। लाठियां खायी है जेल गये है और इन सबकी छाप भी उनकी कविता पर भीतर तक है। साथ-साथ यह भी याद रखना जरूरी है कि नागार्जुन पहले बौद्ध धर्म मे दीक्षित होकर वैधनाथ मिश्र से नागार्जुन बने, फिर गृहस्थ बनकर माक्र्सवादी भी बन गए। इस प्रकार वे दो दर्षन-परपंराओ भारतीय बौद्ध दर्षन तथा पाष्चात्य माक्र्सवादी दर्षन से घनिश्ठ रूप से संबद्ध रहे। तो यह है नागार्जुन का जीवन पटल क्या संवेदना के रूपों को समझने के लिए किसी पटल के जीवन के बारे मे जानकारी जरूरी है। लेकिन कुछ बातें, कुछ मोटी-मोटी बातें अगर हम कवि के बारे मे जान सकें तो समझने मे सुविधा जरूर होगी।

प्रकृति संसार- कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति एक बच्चा भी सबसे पहला चित्र प्रकृति का बनाता है और सबसे पहली कविता भी प्रकृति पर ही लिखता है। पता नही यह बात कहा तक सच है। नागार्जुन के बारे मे इतना तय है कि उनकी कविता का एक बहुत बड़ा भाग प्रकृति- निर्मित तथा उनकी कविताओ को एक अपरिहार्य संवेग प्रकृतिजन्य है। प्रकृति के असंख्य रूपों ने नागार्जुन को तीव्रतासे संवेदित किया है। उनके पहले कविता सग्रंह 'युगधारा' मे से एक कविता है-

रजनीगंधा

तुम खिलो रात की रानी

हो म्लान भले यह जीवन और जवानी

तुम खिलो रात की रानी

प्रहरी-परिवेश्टित इस बंदीशाला में

मैं सडूँ सही, पर ताजी रहे कहानी

तुम खिलो रात की रानी।

www.ignited.in

यह कविता रात की रानी का वर्णन मात्र नही है। बल्कि वर्णन तो बहुत कम है। मुख्यतः सुगंध के प्रभाव का वर्णन है। पुलकित होते तन मन, जगती है वाणी इसके अलावा कविता केवल रात की रानी पर ठहर नही जाती उसमें परिवेश का उल्लेख है वाचके के निजी जीवन का भी, राजनीतिक स्थिति का भी यह प्रहरी परिवेशिठत बंदीशाला है 'जहां मै सड़ूँ यही जहां ये हद्यहीन ये नरपिशाच ये कुत्ते शासन कर रह है जहां सेल-नियंत्रित प्राणी तक रजनीगंधा के अनुपम सुवास से सुरभित शीतल समीर का हल्का झोंका आता है और इस झोंके के प्रभाव से वाचक अपने सारे अभाव अभियोग भूल जाता है। इस तरह प्रकृति मनुष्य की सहयोगी है। मुक्तिदाता तभी तो हो म्लान भले यह जीवन और जवानी तुम खिलो रात की रानी यह केवल प्रकृति प्रम की कविता नही है एक ही कविता मे प्रकृति-प्रेम भी है और व्यवस्था के प्रति घृणा भी।

मनुष्य और पशु:-

प्रायः प्रकृति चित्रण का अर्थ होता है पेड़ पौधो, हवा, बादल, पहाड़, समुद्र, सूर्य, चद्रंमा तारो का चित्रण लेकिन पशु भी इसी प्रकृति के अंग है यह बात अक्सर भुला दी जाती है जब से मनुष्य है तभी से पशु है उसके साथ और जिस तरह पेड़ पौधो, पहाड़, समुचित्रण लेकिन पशु भी इसी प्रकृति के अंग है यह बात अक्सर भुला दी जाती है जब से मनुष्य है तभी से पशु है उसके साथ और जिस तरह पेड़ पौधो, पहाड़, समुद्र ने मनुष्य की चेतना को प्रभावित किया है वैसे ही जानवरो ने भी विष्व साहित्य की कुछ दुर्लभ कृतियां मनुष्य और पशु के संबंधो के बारे मे है जैसे तालस्टाय की मशहूर कहानी "यार्डस्टिक" जो एक घोड़े की और उसके माध्यम से मनुष्य की कहानी है। नागार्जुन की कविता में जानवर भी संवेदना जगाते है और नागार्जुन ने बहुत मार्मिकता से अंकन किया है प्रायः हर जगह जानवर और आदमी का जीवन सम्मिलित रूप से आता है जैसे प्रसिद्ध कविता अकाल और उसके बाद मे या "नेवला" में। लेकिन हम उस कविता को ले जिसके बिना नागार्जुन के काव्य के सार को समझना कठिन है।

"पैने दांतों वाली"

धूप में पसरकर लेटी है

मोटी-तगड़ी, अधेड़, मादा सूअर

जमना -किनारे

मखमली दूबों पर

पूस की गुनगुनी धूप में

पसरकर लेटी है।

इस प्रकार कविता का सम्पूर्ण सौदर्य शास्त्र यहां मिलता है अर्थात जीवन का क्षुद्रतम अंश भी कविता के लिए पवित्र है तथा जीवन का प्रत्येक कण कवि की संवेदना को जगाने मे सक्षम है। एक मादा सूअर जो धूप मे पसर कर अपने छौनो को दूध पिला रही है- वह भी नागार्जुन की संवेदना की हकदार है क्योंकि यह भी तो मादरे-हिंद की बेटी है। यहां इस कविता मे जीवन की क्षुद्रता का ऐष्वर्य मिलता है और इसलिए यह कविता केवल एक मादा सुअर की कविता नही है।

दैनन्दिन जीवनः-

नागार्जुन के लिए जीवन का प्रत्येक कण पवित्र है और कविता को सहज स्वाभाविक अवलम्ब जब नेवला या 'मादा सूअर' उनकी संवेदना को झकझोर सकती है तो फिर थाना धमदाहा बस्ती रूपउली का प्राइमरी स्कूल मास्टर या खुरदुरे पैर वाला रिक्षावाला या नगधड़ग छोकरा क्यों नही। जीवन के तलछट कहें जाने वाले गरीब-गुरबों का जीवन नागार्जुन के हद्य को द्रवित कर देता है। बड़ी विकलता से नागार्जुन दैनंदिन जीवन के कार्य व्यापारों का और गरीबी का चित्रण करते है। घर मे बच्चा बीमार है और गृहिणी फटी दरी पर बैठ कर चावल चुन रही है। फिर बच्चे की दतुंरित मुस्कान है जो मृतक में भी डाल देगी जान। इस प्रकार हम देखते है कि नागार्जुन को कितनी छोटी-छोटी बाते और चीजें रोक लेती है अपनी तरफ खिचती है और इन छोटी-छोटी बातो से उनकी सम्पूर्ण जीवन-द्रष्टि बनती है।

राजनीतिक संवेदनाः-

नागार्जुन काव्य का एक बड़ा अंश राजनीतिक है। नागार्जुन की राजनीतिक कविता रघुवीर सहाय या मुक्तिबोध से भिन्न है। नागार्जुन की राजनीतिक कविता मे संघर्श, विद्रोह तथा जनता की जय मे विश्वास मिलता है। छोटी से छोटी लड़ाई भी नागार्जुन को बेचैन कर देती है। बस सर्विस बंद रही "तीन दिन तीन रात" से लेकर भोजपुर तक की कविता मे राजनीतिक बेचैनी देखने को मिलती है।

साथ ही यह भी सही है कि हिंदी मे गांधीजी पर जितनी कविताएं लिखी गयी है उनमें नागार्जुन की कविता 'गांधी' अलग से याद आती है।

www.ignited.in

बोले तुम केवल पाँच मिनट

चुप रहे आदमी दस हजार बस पाँच मिनट

व्यंग्य की धारः-

नागार्जुन के साथ एक विशेष बात यह है कि वह व्यंग्य के भी बेजोड़ कवि है। संभवतः कबीर के बाद व्यंग्य का इतना बड़ा कवि दूसरा नही ऐसा आलोचकगण कहते है।

यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता मे नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नही हुआ। वास्तव मे संवेदना की तीव्रता तथा एक पक्ष से प्रेम की अधिकता एवं दूसरे से घृणा ही हमें व्यंग्य की ओर ले जाती है। जैसा कि "कोकिला" से प्रेम और बंदूक से घृणा के दूंदू मे ही कविता स्थित है। नागार्जुन कहते है-

नफरत की अपनी भट्टी में

तुम्हें गलाने की कोशिश की

मेरे अंदर बार-बार ताकत भरती है।

प्रतिहिंसा की स्थायी भाव है मेरे कवि का जन-जन में जो ऊर्जा भर देश मै उद्गाता हूँ उस रवि का" नागार्जुन पूरी शक्ति से इस व्यवस्था पर प्रहार करते है। जैसा कि डा. नामवर सिंह लिखते है इस प्रहार मे धार वहां आती है जहां आवेश सयंत होकर व्यंग्य का रूप ले लेता है और कत्थई दांतों की मोटी मुस्कान बेतरतीव मूंछो की थिरकन बन जाती है। इसी तरह भारत मे ब्रिटेन की रानी के आने पर स्वागत की धूम-धाम देखकर नागार्जुन ने कहा- आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी, यही हुई है राय जवाहरलाल की व्यंग्य मे संवेदना की धार उल्टी चलती है, जब से प्रेम ही शसन के प्रति घृणा मे बदल जाता है।

सारांश - अब तक जो हमने नागार्जुन के काव्य मे संवेदना के विभिन्न रुपों की चर्चा की। एक कवि जो कुछ देखता-सुनता ग्रहण करता है सबका उस पर प्रभाव पड़ता है उसके मन पर सबकी छाप पड़ती है वह हर चोट से झंकृत होता है। उसकी कुछ न कुछ प्रतिक्रिया होती है वह दुखी होता है, खुश होता है विस्मय रोमांच, भय सबकी अनुभूति उसे होती है वह हंसता भी है क्रुद्ध भी होता है आक्रमण भी करता है। ये सारे भाव उसमें उत्पन्न होते है बाह्य जगत के संपर्क से जो कुछ घटित होता है उसे ही संवेदना कहते है जो कवि जितना अधिक संवेदित होता है अर्थात् संवेदनशील होता है वह उतना ही बड़ा होता है।

नागार्जुन की कविता मे अनेक संवेदन मिलते है जीवन के अनेक रुप तथा स्थितियां पशु-पक्षी, हवा, पानी, खेत-बगीचे, नदी पहाड़, बादल मानव जीवन बचपन जवानी, नारी सौदर्य, राजनीति, क्रांति विद्रोह संघर्श, आकांक्षा आशा-निराशा, जय-पराजय, राग-विराग सब कुछ है यहां इनमें संवेदना के अनेक धरातल मिलते है यही नागार्जुन की श्रेश्ठता है। यही उनकी कविता की शक्ति है नागार्जुन न तो सिर्फ व्यंग्यकार है न सिर्फ राजनीतिक कवि न सिर्फ बादलो के कवि। नागार्जुन सम्पूर्ण जीवन के कवि है। यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता मे नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नही हुआ। डा. नामवर सिंह कहते है नागार्जुन का व्यंग्य भारतेन्दुकालिन व्यंग्यकारो से भी जुड़ता है उन्होने आज की व्यवस्था पर गहरा प्रहार किया है सबसे ज्यादा चोट राजनेताओ पर की और कई बार खुद अपने पर इस प्रकार नागार्जुन की कविताओं का रुप व्यंग्य को धारण और सप्रेशित करता है। एक और कविता 'आए दिन बहार के' यह स्पष्टतः राजनीतिक व्यंग्य है। इस कविता का पहला बंद इस प्रकार है।

स्वेत-श्याम-रतनार अखियां निहार के

सिडकेटी प्रभुओं की पग घूर झार के

लौटे है दिल्ली से कल टिकट मार के

खिले है दांत ज्यों दाने अनार के

आए दिन बहार के

इस एक बंद मे जिसमें उन नेताओं पर व्यंग्य है जो दिल्ली से टिकट मारे के विधायक या सांसद बनने पर लौटे है यह उनके लिए खुशी का क्षण है लेकिन नागार्जुन चोट करते है और इसके लिए पारंपरिक श्रृगांरिक शब्दावली और चिर-परिचित मुहावरों को प्रयोग करते है। जिससे कि इस अश्लील प्रणय का विद्रुप उभर सके। शासन की बदूंक, कर दो वमन आओ रानी हम ढोऐगे मास्टर, तीनो बंदर बापू के ये सब सर्वोत्तम व्यंग्य कविताओं मे गिनी जाती है। जैसा कि नागार्जुन स्वंय कहते है- प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि को तो यह घृणा जो कुछ जड़ विगलित जीवन विरोधी हे उसके प्रति घृणा ही इन व्यंग्य कविताओं के मूल मे है। कई बार अचानक यह तत्व नागार्जुन की अन्य कविताओं मे भी टूट पड़ता है।

www.ignited.in

सदर्भः-

1. आधुनिक हिंदी साहित्य- नागार्जुन की संवेदना के विभिन्न रुप पृश्ठ संख्या 8, 9, 10, 11
2. नागार्जुन साहित्यकार कविता कोष. वतहण्
3. https://m.bhartdiscovery.org
4. https://www.bhartdarshan.co.nz
5. https://jivani.org.com
6. https://hindimapsofindia.com

Corresponding Author

Manju*

MA in Hindi (UGC NET)

senkaswan045@gmail.com